**ज्ञान तत्व अंक 159**

**(क) लेख, माया मिली न राम । प्रकाश करात की असफल योजना का खुलासा।**

**(ख) श्री के. के. सोमानी, बलार्ड स्टेट, द्वारा सुझाव और मेरा उत्तर ।**

**(ग) ठाकुर दास जी बंग के नेतृत्व में लोक स्वाराज्य के राष्ट्रीय आन्दोलन का रूपरेखा का विवरण ।**

## (क) माया मिली न राम

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है यह वाक्य सुनते सुनते बूढ़ा हो चला हूँ। पचास वर्ष पूर्व भी यह वाक्य बार–बार दुहराया जाता था और आज भी नेताओं का तो यह कहना आम आदत ही है। मैं नहीं कह सकता कि बड़े से उनका आशय क्षेत्रफल से है या आबादी से या गुणवत्ता से। यदि क्षेत्रफल और आबादी ही लोकतंत्र की पहचान है तो यह बात सच ही है क्योंकि साम्यवादी चीन को अभी लोकतांत्रिक देश कहना शुरू नहीं किया जा सका है और यदि गुणवत्ता की बात करें तो हम निरंतर बड़े हुए हैं कि छोटे इस बात में मेरा आकलन तो बिल्कुल विपरीत ही है। भारत में तो ऐसे–ऐसे लोकतंत्र के पेशेवर चारण और भाट भी मिलते हैं जो संजय दत्त को ए. के सैंतालीस मामले में सजा घोषित होते ही भारत में लोकतंत्र के सशक्तिकरण की दुहाई देना नहीं भूलते भले ही ऐसे अपराधों का रेकार्ड लगातार ही क्यों न उपर जा रहा हो। पिछले पचास वर्षों में लोकतंत्र की छवि धुमिल होने का रेकार्ड हमेशा ही टूट रहा हैं। वर्तमान राजनैतिक घटनाक्रम ने भी पिछले सभी रेकार्ड तोड़े ही हैं। भविष्य में वर्तमान रेकार्ड भी टूटने की पूरी पूरी संभावना हैं। फिर भी लोकतंत्र के प्रशंसक “सबसे बड़ा लोकतंत्र है” और “लोकतंत्र मजबूत हो रहा है” जैसे वाक्य प्रयोग करने से नहीं चूकते।

पिछले माह करात जी ने माया और राम को एकसाथ लेकर लोकतंत्र का एक नया अध्याय शुरू किया। वैसे तो करैत सर्प स्वयं में इतना जहरीला होता है कि उसका काटा व्यक्ति कभी बचता ही नहीं। फिर यदि ऐसा विषधर करैत पूरी तैयारी से कई बार चेतावनी के बाद भरपूर वार कर दे तो बचने की कल्पना ही व्यर्थ हैं। महिनों से करात जी चेतावनी दे रहे थे। फिर उन्होंने वार करने के पूर्व माया को भी जोड़ लिया और राम को भी। विदित हो कि भारतीय राजनीति में माया का प्रतिनिधित्व मायावती जी के पास सुरक्षित है तो राम का संघ के पास। मुझे तो आश्चर्य हुआ जब संघ प्रमुख सुदर्शन जी तक इस आक्रमण में करात जी से स्वयं चर्चा किये। यदि राम और भरत में किसी कारण से राजगद्दी का विवाद हो और उस विवाद में राम रावण बैठकर सलाह करना शुरू करें तो कैद में पड़ी बेचारी सीता का क्या हाल होगा यह कल्पना भी बेहद कठिन है। राम का ऐसा अधोपतन तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था। किन्तु स्वयं अपनी आंखो से दिखा जब धुर हिन्दू कट्टरवादी सुदर्शन जी और धुर हिन्दू विरोधी करात जी मामूली से मनमोहन की गद्दी के विरूद्ध फोन पर योजना बनाने में साथ हो लिये। केरल में सिद्दान्तों के लिये मरने वाले दोनो गुटों के कार्यकत्ताओं की आत्माएँ क्या कहती होंगी यह कल्पना मैं तो नहीं कर पा रहा। पता नहीं किन स्थितियों में दोनों ने साथ होने की आवश्यकता महसूस की और भविष्य में अब दोनों का अलग अलग क्या स्टैन्ड होगा यह वे ही बता सकते हैं।

संसद में नोट तंत्र की खूब चर्चा हुई। करोडों रूपये किसने दिये और किसने लिये या इन्कार किये यह मेरे लिये शोध का विषय नहीं क्योंकि इस घृणित कार्य में मायावती और मुलायम सिंह में कौन अधिक है कौन कम यह बताना आसान काम नहीं। इसी तरह भाजपा और कांग्रेस के अब तक के चरित्र में करीब करीब समानता ही हैं। वामपंथी जरूर ऐसे लेनदेन में बदनाम नहीं क्योंकि सत्ता संघर्ष में उनको नोट लेन देन पर कभी विश्वास नहीं रहा। वे तो हत्या और बलात्कार को अधिक कारगर हथियार मानते आये हैं। बंगाल में तो इसका खुला प्रयोग हमने देखा ही है किन्तु वर्तमान राष्ट्रीय खेल में अभी वह स्थिति नहीं आ पाई है। वामपंथी इतनी जल्दी परमाणु करार को मुस्लिम विरोध के साथ जोड़ देंगे ऐसी तो किसी को भी कल्पना नहीं थी। लेकिन वामपंथियों ने साम्प्रदायिकता और जातिवाद के साथ ऐसा खुला समझौता किया कि दुनिया देखती ही रह गई। जब पूरे देश में दोनो ओर से खुला खेल फरूखाबादी चल ही रहा था तो हारने के बाद दूसरे पक्ष को किसी चरित्र की कसौटी पर कसने का क्या औचित्य है? साफ बात है कि आप चरित्र पतन के इस युद्ध में भी हार गये और आपके अपने विश्वसनीय साथी ही बिक गये। अपनी समीक्षा करने की आवश्यकता है। रोने से काम नहीं चलेगा क्योंकि आपने पूर्व में कोई बहुत अच्छा आदर्श स्थापित नहीं कर रखा है।

मुझे तो समझ में नहीं आया कि अडवाणी करात को यह क्यों सूझ गया। मनमोहन सरकार लगातार कमजोर हो रही थी। एक पर एक प्रदेश उसके हाथ से निकल रहे थे। महंगाई का भूत भारत के छोटे से बड़े सभी वर्गों के मस्तिष्क तक को प्रभावित कर रहा था। बड़े से बड़े कांग्रेसी भी हताश दिख रहे थे। सोनिया मनमोहन जी को भी भविष्य अंधकारमय दिख रहा था। सभी कांग्रेसी और उनके सहयोगी एक दूसरे पर दोषारोपण शुरू कर दिये थे। पूरे भारत में मंहगाई के खिलाफ आंदोलन शुरू हो रहे थे। अनेक टी.वी. चैनल भी जनमत सर्वेक्षणों में कांग्रेस गठबंधन को पीछे बताने लगे थे। कांग्रेस मंहगाई के भूत से पिण्ड छुडाने का कोई उपाय ही नहीं खोज पा रही थी। एकाएक करात अड़वाणी ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हुए मंहगाई के भूत को कांग्रेस के पिंजडे से बाहर कर दिया। इन्होंने अमेरिका विरोध रूपी एक मारक जिन्न चढ़ाने की लालच में ही यह मूर्खता भी जिसके परिणाम स्वरूप भूत से तो कांग्रेस मुक्त हो गई किन्तु जिन्न के चढ़ने में कुछ कसर बाकी रह गई। कांग्रेस फिर से खड़ी दिख रही है और अडवाणी करात पछता रहे हैं।

करात तो नौ सिखिया थे। वामपंथी दलों का नेतृत्व और सत्ता से गठजोड़ इतने आनन फानन में हुआ कि करात जी स्वयं को काबू में नहीं रख सके। प्रधान मंत्री या सोनिया गांधी जैसों के साथ बराबरी से भी उपर की क्षमता देखते ही वे अपने को भारत का स्टालिन मानने लगे। यदि कुछ दिन और चलता तो वे भारत से भी उपर उठकर स्वयं को अमरीकी राष्ट्रपति बुश से भी अधिक मानना शुरू कर देते। “गिरा देंगे” “गिरा कर ही दम लेंगे” जैसे शब्दों में उनकी जैसी भाव भंगिमा दिखती थी वैसी भाव भंगिमा और भाषा तो तानाशाह भी बहुत बाद में सीखता है किन्तु करात ने तो प्रारंभ ही यहीं से किया। स्वाभाविक ही कहावत है कि नव वयस्कों को एकाएक अधिक अधिकार सौंपने में सावधानी रखनी चाहिये। ज्योति बाबू, सुरजीत जी आदि ने सावधानी न रखकर भूल की। फिर भी अभी करात जी को ज्यादा क्षति नहीं हुई है क्योंकि जो कुछ बिगड़ा है, वह वामपंथ का बिगड़ा हैं, उनके समक्ष तो पूरा जीवन बाकी है। किन्तु अडवानी जी तो बच्चे नहीं थे। उनको नारद मोह क्यों हुआ? चुनावों के लिये कुछ ही महिने बाकी

थे। सरकार का हारना तय था। लेकिन नारद मोह ने उनकी मति गड़बड़ कर दी। स्पष्ट दिखता है कि आर्थिक मामलों में पूरा देश एक निश्चित दिशा में जा रहा है। इक्यान्नवे के पूर्व की अर्थनीति अब नहीं लौट सकती। वामपंथियों को छोड़ कर सभी दल इस पर एक मत हैं। भाजपा भी इससे अलग नहीं। विदेश नीति के मामले में भी दिशा करीब करीब स्पष्ट ही है। अमेरिका के साथ अप्रत्यक्ष सहयोग और प्रत्यक्ष नाराजगी का खेल लम्बे समय से चल रहा है। वामपंथियों को छोड़कर सभी दल इस मुद्दे पर भी एक जुट हैं। इसमें भी भाजपा भिन्न सोच नहीं रखती। मंहगाई एक ऐसा सर्व सुलभ मुद्दा है जो सबके लिये समान रूप से सुलभ है। इसमें किसी को कोई रोक टोक नहीं। "आतंकवाद और साम्प्रदायिकता" दो ऐसे मुद्दे हैं जिनमें भारत की पूरी राजनीति दो विपरीत ध्रुवों पर टिकी है। एक में है भाजपा और उसके साथी और दूसरे में है वामपंथ और उसके साथी। इन दोनों मामलों में कांग्रेस वामपंथ के साथ नहीं है किन्तु शत्रु का शत्रु मित्र होने से दोनो की निकटता बनी रहती है। यह विषय वर्तमान स्थितियों में भाजपा के लिये सर्वाधिक उपयुक्त रहा है। पूरे भारत में अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के विरूद्ध भी जनमत प्रबल हो रहा है और आतंकवाद के विरूद्ध भी। मंहगाई का सत्ता विरोधी मुद्दा और अल्पसंख्यक तुष्टीकरण का कांग्रेस विरोधी मुद्दा मिलकर भाजपा के लिये पर्याप्त थे। फिर इन मुद्दों को छोड़कर परमाणु उर्जा और विदेश नीति को प्राथमिक मुद्दा बनाने की भूल या मूर्खता भाजपा ने क्यों की यह समझ में नहीं आया। जब हम नारद मोह को देखते–सुनते हैं तो विश्वास नहीं होता कि नारद सरीखा व्यक्ति मोह में ऐसा भी कर सकता है। अडवाणी के सत्ता मोह में इस आचरण को देखकर तो लगता है कि आज भी नारद मोह दुहराने वालों की कमी नहीं। यह अलग बात है कि शीशे में नारद का वास्तविक चेहरा दिखाने वाले भी कोप भाजन बने थे और अडवाणी जी को मतदान में उनका चेहरा दिखाने वाले सांसद भी बन रहे हैं। अब चिल्लाने या गालियाँ देने से तो कुछ होने वाला नहीं है। यदि कुछ सीख ले सकें तो आठ माह बाकी हैं और कुछ भरपाई हो सकती है।

परमाणु करार सही है या गलत यह मैं स्वयं नहीं कह सकता क्योंकि इसके गुण दोषों की ज्यादा जानकारी का अभाव है। मैं तो सिर्फ इतना ही जान सका हूँ कि इसके पक्ष में बोलने वाले लोगों में विश्वसनीय लोग अधिक हैं और विरोध में बोलने वालों में या तो स्थापित वामपंथी या विरोधी राजनेता। कोई भी अन्य तटस्थ व्यक्ति इस परमाणु करार के विरोध में नहीं बोल रहा। या तो सब लोग चुप हैं या समर्थक। मैंने भी चुप रहना ही ठीक समझा क्योंकि जानता तो था नहीं और बिना जाने बोलना ठीक नहीं।

इस मुद्दे ने देश में एक संकट खड़ा कर दिया है। अब तक की परिपाटी रही है कि सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर अन्य गुणों के साथ साथ इमानदारी और चरित्र को भी महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। चाहे नेहरू जी रहे हों या उनके बाद के शास्त्री जी, बी.पी.सिंह, अटल जी या कोई और। इंदिरा जी को छोड़कर बाकी लोग अपेक्षाकृत अधिक ही विश्वसनीय रहे हैं। आडवाणी जी भी यद्यपि इस मामले में, सोनिया मनमोहन की जोड़ी के समक्ष मायावती को सामने लाया गया। ऐसी क्या मजबूरी रही यह पता नहीं। मनमोहन सिंह सोनिया गांधी और मायावती की कैसे तुलना करें यह समझ में नहीं आ रहा। तुलना तो तब की जाय जब आंशिक भी तुलना योग्य हो। यदि मायावती जी की तुलना मुलायम अमरसिंह जोड़ी से करनी हो तब तो संभव है किन्तु मनमोहन सिंह से तो तुलना संभव ही नहीं है। फिर भी हमारे साथियों ने बेमेल तुलना का प्रयत्न किया जो बेहद कष्ट कारक रही। दूसरी और एक खुशी की भी बात

रही कि स्वतंत्रता के बाद भारत के बौद्धिक जगत में वामपंथियों का एकाधिकार रहा है। साहित्य जगत से लेकर शैक्षिक जगत तक इनके ऐसे ऐसे मोहरे फिट रहे कि किसी भी असत्य को वे सामान्य वातावरण में तत्काल सत्य प्रमाणित कर दिया करते थे। अपने लोगों को योजना पूर्वक पुरस्कृत कराना और ऐसे लोगों से असत्य को सत्य प्रमाणित कराने में इन्हें हमेशा ही सफलता मिलती रही है। संघ परिवार भी इनके वर्चस्व को तोड़ नहीं पाया। इस बार के परमाणु करार मुद्दे पर इनका एकाधिकार टूटा है। इस बार लाख लेख लिखते रहने के बाद भी असत्य सत्य नहीं बन पाया। मुझे तो लगा कि भाजपा का परमाणु करार विरोध भी जनमत बनने में सहायक ही हुआ क्योंकि यदि दो अविश्वसनीय लोग एक दूसरे के विपरीत ताल ठोक दें तो सत्य भ्रमित हो जाता है और यदि ऐसे लोग मिल जावें तो सुविधा होती है। आश्चर्य है कि रामदेव जी भी इस मामले में परमाणु करार के समर्थन में खड़े हो गये। मेरे विचार में वैचारिक स्तर पर वामपंथ की पराजय निकट आने लगी है।

मैं यह स्पष्ट देख रहा हूँ कि सोनिया मनमोहन जोड़ी ने पिछले एक वर्ष से बहुत धैर्य पूर्वक सब कुछ सहन किया है। दूसरी ओर करात और अडवाणी जी ने सब प्रकार की तिकड़म, बड़बोलापन, अधैर्य आदि सब प्रयत्न किये। इस एक राजनैतिक घटनाक्रम ने यह प्रमाणित कर दिया कि “धैर्य का फल मीठा होता है”। करात जी ने माया और राम को एक साथ साधने की कोशिश तो जरूर की किन्तु माया और राम दोनो ही राजनीति में औंधे मुँह पड़े हैं और मनमोहन सिंह अपने जीवन में पहली बार बिजय का चिन्ह बनाते हुए मुस्कुरा रहे है।

# प्रश्नोत्तर

(ख) श्री के. के. सोमानी, बलार्ड स्टेट,

सुझाव– अंक 149 से मालूम पड़ा कि आपको अब लगने लगा है कि जो रास्ता आपने चुना है, उससे सफलता मिलना मुश्किल है। यह मैने अपने कई पत्रों में बताने की चेष्टा की थी और आग्रह किया था कि आप सिर्फ 1 या 2 मुद्दों पर अपने को केन्द्रित करें। अभी भी आपने जो रास्ता अपनाया है – यज्ञ का, उससे भी सफलता मिलने की गुजांइश नहीं लगती। आपने यह स्पष्ट भी किया है कि "ज्ञान यज्ञ स्वयं में समाधान नहीं है, समाधान पूरक है" एवं इसका प्रभाव तभी स्पष्ट होगा, जब "संपूर्ण भारत में यह प्रणाली विकसित हो", जो आज की परिस्थिति में नामुमकिन है।

आपने इसका समाधान भी बताया है "रामायण काल में तत्कालीन ऋषि मुनि थे राम को शस्त्र भी देते और शिक्षा भी" अर्थात् अपनी शक्ति उन्होंने राजपुत्रों को तैयार करने में ही लगाई, न कि चारो ओर समाज में। समाज को भी तैयार करने को यज्ञ होते थे। आदि शंकराचार्य ने यज्ञ की परिभाषा की है – "देवपूजा, संगतिकरण, मैत्रीकरण" – अर्थात् ईश्वर पूजा निमित्त लोगों को इकट्ठा करना और आपस में भाईचारा पैदा करना। आपका यज्ञ भी उसी रास्ते पर है पर उससे एक निश्चित सिद्धान्त को समझाने, फेलाने के लिए प्रयोग करना चाहिए, न कि विचार मंथन कर नया रास्ता खोजने में।

सौ मूर्ख पुत्रों से एक गुणी पुत्र बेहतर है लाखों तारे अन्धकार नहीं मिटा सकते, वह एक चंद्रमा कर देता है। इसलिए विचारों का निष्कर्ष तो विद्वानों पर छोड़ देना चाहिए और निष्कर्ष को यज्ञों द्वारा प्रचार करना चाहिए।

जहाँ तक कार्य संपादन का सवाल है, ऋषियों ने जैसे राम–लक्ष्मण को तैयार किया, उसी तरह आपकी भी चेष्टा सीमित दायरे में, देश के प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं कुछ अन्य पार्टियों के नेताओं के साथ होनी चाहिए। इसमें भी पहिले कार्य के सिर्फ एक बिन्दु पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए।

इसके लिए मैंने आपसे आग्रह किया था कि आप सिर्फ पंचायत राज्य और चुनाव पद्धति को ही पकड़े। इसका कारण भी यह है कि देश को सभी राजनीतिक पार्टीयाँ पंचायत राज्य और विकेन्द्रीकरण पर सहमत हैं। परन्तु नेता लोग अपने अधिकारों को छोड़ने को तैयार नहीं है। इसलिए ऊपर से पंचायत राज्य की बात करते हैं पर पंचायतों को कोई अधिकार देने को तैयार नहीं हैं – इस बारे में, मैं अपना एक इंग्लिस लेख भेज रहा हूँ।

आपको नेताओं से वार्ता, एवं उनके ऊपर दबाव लाने के लिए यज्ञ एवं जमाने के अनुसार प्रेस, टेलिविजन आदि का सहारा लेना पड़ेगा। मेरे विचार से आपको ज्ञानतत्व का संपादन भी दूसरों से कराना चाहिए, नहीं तो आप पूरा समय इस पर दे नहीं सकेंगे।

इसके सिवाय मैं, एक दूसरा पत्र, आपके उठाये हुए कुछ विचारे पर अलग से दे रहा हूँ।

आपका

कृष्णकुमार सोमानी

उत्तर – आपका पत्र मार्च में ही मिला था। मैं स्वयं दुविधा में रहा। जीवन के पचास वर्ष समस्याओं के समाधान खोजने और स्थानीय स्तर पर प्रयोग में खर्च किये। दिल्ली आया। समस्याओं के समाधान के

साथ अपनी क्षमता की तुलना करने लगा तो समझ में ही नहीं आया कि दोनो के बीच कैसे तुलना करूँ। यदि एक और सौ का अनुपात बताउँ तक भी असत्य ही होगा। मार्ग सिर्फ दो ही है (1) अपनी क्षमता का विस्तार करूँ (2) समस्याओं में से किसी एक को चुनकर उसमें शक्ति लगाउँ। निर्णय नहीं कर पाया और चार वर्षो तक दोनों दिशाओं में प्रयत्न जारी रहे।

समस्याएँ दो स्तर पर बढ़ रही हैं (1) विश्व स्तर पर (2) राष्ट्रीय स्तर पर। विश्व स्तर पर समस्याओं में विस्तार के अनेक लक्षणों में से नौ लक्षण प्रमुख हैं। (1) निष्कर्ष निकालने का मुख्य आधार विचार मंथन से हटकर विचार प्रचार की ओर बढ़ना (2) संचालक और संचालित के बीच बढ़ती दूरी। यह दूरी "राजनैतिक, धार्मिक तथा आर्थिक" सभी तीनों दिशाओं में बढ़ना (3) मानव स्वभाव ताप का लगातार बढ़ना (4) मानव स्वभाव स्वार्थ का लगातार बढ़ना (5) धर्म और विज्ञान के बीच बढ़ती दूरी (6) भावना और विचार के बीच बढ़ती दूरी (7) राज्य और समाज का एक दूसरे पर से नियंत्रण कम होना (8) राज्य का सुरक्षा और न्याय की अपेक्षा जन कल्याणकारी कार्यों की ओर अधिक आकर्षण।(9)अच्छे और बुरे के बीच भौतिक पहचान भ्रम मूलक होना इन नौ लक्षणों में से कोई एक भी लक्षण दिखाई दे तो पूरे विश्व को खतरे का एहसास होना चाहिये। किन्तु वर्तमान समय में तो उपरोक्त सभी लक्षण मौजूद भी हैं और लगातार विकराल से विकराल भी होते जा रहे हैं। निकट भविष्य में किसी लक्षण के कम होने की भी कोई संभावना नहीं दिखती।

राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं पर विचार करें तो सभी ग्यारह समस्याएँ "चोरी, डकैती, मिलावट, बलात्कार, जालसाजी, आतंक, हिंसा, चरित्र पतन, भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातीय कटुता, आर्थिक असमानता, श्रमशोषण आदि" भारत में लगातार बढ़ रही हैं तथा निकट भविष्य में इनमें से भी किसी के समाधान के कोई लक्षण नहीं दिखते। ये ग्यारह समस्याएँ भी इतनी गंभीर हैं कि इनमें से कोई एक समस्या का भी बढ़ना बहुत खतरनाक है। यदि ये सभी समस्याएँ एक साथ बढ़ रही हों तो आप कल्पना ही कर सकते हैं।

मैंने अपने पूरे जीवन काल में इन सभी समस्याओं का अलग-अलग भी समाधान खोजा और एक मुस्त भी। दोनो प्रकार की अलग अलग समस्याओं के समाधान की चर्चा तो विभिन्न स्तरों पर ज्ञान यज्ञ में होती रहती है या होती रहेगी। किन्तु दो मुख्य समाधान मैने सोचे हैं (1) विश्व स्तरीय समस्याओं का समाधान है ज्ञान यज्ञ जिसका अर्थ है विचार मंथन। राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं का समाधान है लोक स्वराज्य अर्थात् समाज में शासन के अधिकार दायित्व तथा हस्तक्षेप का न्यूनतम होना। इन दोनो कार्यो की प्रणाली तथा परिणाम भिन्न-भिन्न हैं। ज्ञान यज्ञ लम्बे समय तक चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है जिससे समाज मजबूत होता है तथा किसी से कोई टकराव या संघर्ष नहीं होता। इसका लाभ भी अदृष्य होता है। इसका प्रभाव हर स्तर पर होता है अर्थात् व्यक्ति से लेकर विश्व तक। लोक स्वराज्य में प्रशासन से सीधा टकराव होता है। इसके अन्तर्गत संविधान संशोधन करना होगा जो राष्ट्रीय स्तर पर ही संभव है, स्थानीय या प्रदेश स्तर पर नहीं। इसका लाभ भी संविधान संशोधन के बाद ही दिख सकता है या मिल सकता है। ज्ञान यज्ञ समाज सुधार है तो लोकस्वराज्य आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन।

मैंने दिल्ली में बैठकर लोक स्वराज्य आंदोलन को पहली प्राथमिकता दी और विचार मंथन को दूसरी। दिल्ली आने के बाद अनुभव हुआ कि लोक स्वराज्य आंदोलन अब तक जैसा समझा गया था उससे ज्यादा कठिन है किन्तु साथ ही यह भी अनुभव हुआ कि भारत की समस्याओं के समाधान का यह ही एकमात्र मार्ग भी है और कोई मार्ग नहीं है। ज्ञान यज्ञ का मार्ग इसकी अपेक्षा कम कठिन है किन्तु उससे समाज सुधार ही संभव है, परिवर्तन नहीं। यह समाज सुधार लम्बे समय में परिवर्तन में सहायक हो सकता है। यदि लोक स्वराज्य आंदोलन संभव न दिखे तब ज्ञान यज्ञ को पहली प्राथमिकता दे सकते है अन्यथा लोक स्वराज्य को ही प्राथमिकता देनी उचित है।

आपने एक या दो मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने की सलाह दी है। मैं पूरी तरह सहमत हूँ। मैंने ज्ञान यज्ञ का मार्ग यह सोचकर अपनाना चाहा था कि अब संघर्ष की संभावना नहीं दिखती। किन्तु अब पुनः ऐसी संभावना बनने लगी है। इसलिये ज्ञान यज्ञ को दूसरी प्राथमिकता में ही रखा जा रहा है।

आपने शंकराचार्य जी द्वारा बताई गई यज्ञ की परिभाषा का उल्लेख किया। आपने यज्ञ का उपयोग आंदोलन के निमित्त करने की सलाह दी। मैं आपको स्पष्ट कर दूँ कि ये सब बातें अन्य यज्ञों के लिये तो हैं किन्तु ज्ञान यज्ञ के लिये नहीं। ज्ञान यज्ञ विशेष परिस्थिति में विशेष विधि से होता है। आज ज्ञान यज्ञ की आवश्यकता की सारी परिस्थितियाँ मौजूद हैं। अब हम पर निर्भर है कि हम पहले लोक स्वराज्य संघर्ष को प्रथमिकता दे या ज्ञान यज्ञ को। ज्ञान यज्ञ सिर्फ विचार मंथन है जिसका परिणाम है असत्य हो हटाकर सत्य को स्थापित करना। यह कार्य भी बहुत जरूरी है। किन्तु लोक स्वराज्य आंदोलन का परिणाम तत्काल भी होगा और कम समय में भी इसलिये उसे पहली प्राथमिकता में रखकर ज्ञान यज्ञ को दूसरी प्राथमिकता में रखा जा रहा है। एक बात और है कि यदि आंदोलन से अन्तिम रूप से निराशा हो जाय तो ज्ञान यज्ञ तो बावन वर्षो से जारी है ही। उसे बन्द तो कर नहीं रहे।

आपने पंचायती राज पर केन्द्रित करने की बात की है। हम स्थानीय व्यवस्था पर केन्द्रित हो रहे हैं जो शब्दांतर भले ही हो परन्तु अर्थ लगभग वही है। पंचायती राज में राज्य पंचायतो को प्रशासनिक अधिकार तो देता है किन्तु विधायी नहीं। हम पंचायतों को विधायी अधिकार भी दिलाना चाहते हैं। पंचायती राज में राज्य इन अधिकारों को कभी भी वापस ले सकता हैं। पंचायत व्यवस्था चूँकि संवैधानिक होगी इसलिये राज्य इनसे छेड़छाड़ नहीं कर सकता। इस तरह हम जिस एक सूत्रीय आंदोलन में सक्रियता की बात कर रहे हैं वह आपकी कल्पना का आंदोलन ही है। फर्क  इतना ही है कि हम इस आंदोलन के साथ साथ द्वितीय प्राथमिकता क्रम में विचार मंथन को भी रख कर चल रहे हैं क्योंकि विचार मंथन रूपी ज्ञान यज्ञ ने ही तो बावन वर्षो में हमें इस योग्य बनाया है कि हम कोई निष्कर्ष निकाल सके हैं।

आपने समाज को समझाने की अपेक्षा कुछ स्थापित राजनेताओं को समझाने में शक्ति लगाने का महत्व बताया। जब राजनेताओं की नीयत ठीक हो और नीतियाँ गलत तब तो उन्हें समझाने में शक्ति लगानी चाहिये किन्तु जब नीयत ही गलत हो तब उसमें शक्ति क्यों लगाई जावे। एक सीधा सीधा सिद्धान्त है कि अपनी कार्य प्रणाली तय करते समय सिद्धान्तों को देश काल परिस्थिति की कसौटी पर कसकर जो निष्कर्ष निकले उस अनुसार आगे बढ़ना चाहिये। भारतीय संस्कृति में एक कमी घर करती जा रही है कि

हम मृत व्यक्तियों के विचार बिना अपनी कसौटी पर कसे ही यथावत् समाज तक पहुँचाना आसान समझने लगे हैं। यह भूल कब से शुरू हुई यह बताना तो कठिन है किन्तु वुध्द, महावीर, इशु, मुहम्मद और उसके बाद स्वामी दयानन्द, गांधी और श्री राम शर्मा तक उसी भूल को दुहराने की भूल हो रही है। स्वामी दयानन्द ने जो कहा और आज वे जीवित नहीं हैं तो हम सबका कर्तव्य है कि आज की देश काल परिस्थिति अनुसार उनके समीक्षित विचार समाज को दिये जायें। इस घोषणा के साथ कि मैने स्वयं विचार मंथन किया है। ऐसी घोषणा न होने से महापुरूषों के विचार रूढ़ बन जाने का खतरा रहता है जो आज हो रहा है। वह महापुरूष यदि आज जीवित होता तो देश काल परिस्थित अनुसार वे समीक्षित विचार समाज को दिये जाये। इस घोषणा के साथ कि मैंने स्वयं विचार रूढ़ बन जाने का खतरा रहता है जो आज हो रहा है। वह महापुरूष यदि आज जीवित होता तो देश काल परिस्थिति अनुसार संशोधित करता किन्तु उनकी मृत्यु के बाद तो वह संभावना भी नहीं रही। मैं नेताओं को समझाने के सिद्धान्त को इसलिये अव्यावहारिक मानता हूँ कि मैंने स्वयं देख समझ लिया है। नेताओं में बहुत कम लोग समझ सकते हैं और वे भी तभी जब जनता की आवाज उठेगी तब। इसलिये हम राजनेताओं को न समझाकर सीधे जनता तक जाना ठीक समझ रहे हैं। आपने निष्कर्ष निकालने का काम विद्वानों पर छोडकर उन निष्कर्षो को समाज तक ले जाने के प्रयत्न की सलाह दी है। मेरे विचार में आपकी यह सलाह बहुत घातक है। जब धूर्त लोग विद्वान को नकली वेष मे निष्कर्ष निकालने लगे और ऐसे धुर्तो की कोई भौतिक पहचान ही न रहे तब सामाजिक आपातकाल होता है। ऐसे ही समय में ज्ञान यज्ञ शुरू होना चाहिए अर्थात निष्कर्ष निकालने का काम भी समाज को ही करना चाहिये और समाज तक पहुचाने का भी। आज पूरी तरह यह संकट आया हुआ होने से हमे यह मार्ग अपनाना पडा हैं।

आपने अपने छोटे से पत्र में गंभीर सुझाव दिये हैं जो इस कार्य के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। मैं आपका आभारी रहूँगा।

(ग)

प्रिय बंधु

बीस इक्कीस बाइस सितम्बर को माननीय ठाकुर दास जी बंग तथा कुछ अन्य मित्रों ने लोक स्वराज्य आंदोलन के लिये सेवाग्राम जिला वर्धा में एक सम्मेलन बुलाया है। सम्मेलन में राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा बनेगी। इस सम्मेलन का राष्ट्रीय महत्व तो है ही, यह सम्मेलन सामाजिक परिवर्तन के लिये भी महत्वपूर्ण हो सकता है। इस तरह यह सम्मेलन भारत की सामाजिक राजनीति के लिये मील का पत्थर होगा ऐसी उम्मीद है।

इस सम्मेलन में हम आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी। इसलिये आप निम्न मुद्दों पर विशेष सावधानी बरतें :–

1. किसी भी सम्मेलन में पद और दायित्व की पृथक पृथक भूमिका होती है। पद की छीना झपटी भी नुकसान करती है और दायित्व से पलायन भी। इन दोनों का अन्तर समझ कर हम अपनी भूमिका तय करें। किसी भी स्थिति में पद की छीना झपटी से बचने का प्रयास करें। यदि सभी पद दूसरों को देना हो तब भी हम सबको तैयार रहना चाहिये। किन्तु यदि दायित्व स्वीकार करने वालों का अभाव हो तो अपने साथी दायित्व स्वीकार करने में पीछे न रहें। आपकी जितनी शक्ति हो उतना दायित्व अवश्य लें। सम्मेलन स्वयं में कोई मतलब नहीं रखता जब तक कोई योजना न बने तथा योजना अनुसार कार्य न हो। इसलिये हमें सक्रिय और सावधान रहना है।
2. सम्मेलन में तीन प्रकार के लोग अधिक रहेंगे (क) वे जो सरकार और कानून को मजबूत करके समस्याओं के समाधान के पक्षधर हैं। ऐसे लोग चाहेंगे कि सरकार पर दबाव डालकर, सरकार से शिक्षा, स्वास्थ्य, शराब बन्दी, पर्यावरण सुधार, रोजगार आदि अनेक समस्याओं का समाधान करायें। ये सरकार से गोहत्या बन्दी या भूमि वितरण की भी मांग करेंगे। इनके पास स्वयं तो समाज परिवर्तन का चरित्र और प्रभाव नहीं है और इच्छाएँ बहुत होने से सरकार पर दबाव डालना इनकी मजबूरी है। ऐसे लोग ही वर्तमान सभी समस्याओं की जड़ में हैं। यह वर्ग बहुत घातक है। ऐसे लोग सम्मेलन में भी भ्रम पैदा कर सकते हैं।

   (ख) वे जो सरकार से छेड़छाड़ या टकराव लिये बिना ही समाज निर्माण के काम में लगना चाहते हैं। ये लोग चाहेंगे कि हम समाज सुधार या समाज निर्माण की कुछ योजनाएँ हाथ में ले लें। ऐसे लोग उच्च चरित्र के भी होते हैं और त्यागी भी किन्तु उनके सारे त्याग से राज्य की उत्श्रंखलता पर कोई अंकुश नहीं लगता। ऐसे प्रस्ताव हमारे लिये बेकार हैं।

   (ग) वे लोग जो किसी न किसी आंदोलन में सक्रिय हैं। वे जोर देंगे कि उनकी बात मान ली जावे। ऐसे लोग स्थापित व्यक्तित्व भी होते हैं और प्रभावित करने की कला भी जानते हैं।

इन तीनो ही मामलों में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। हमारे आंदोलन की सिर्फ एक ही स्पष्ट दिशा होनी चाहिये कि राज्य के हस्तक्षेप, दायित्व तथा अधिकार नीचे की इकाइयों को स्थानांतरित करने के लिये राज्य को मजबूर किया जा सके। कहीं ऐसा न हो कि हमारी मांग ही राज्य को ताकत देने वाली हो जाय अथवा ऐसा भी न हो कि हमारी मांग का राज्य पर कोई प्रभाव ही न पड़े। चुनाव सुधार या भ्रष्टाचार नियंत्रण जैसी मांग महत्व हीन सिद्ध होगी क्योंकि ये मांगे विकेन्द्रीयकरण से जुड़ी हुई नहीं हैं भले ही कैसी भी उपयोगी क्यों न हों। हमारी पहली लड़ाई अधिकार विभाजन की है। उसके बाद हम समाज सुधार करेंगे। इस तरह चर्चा में आप एक साफ दिशा लें कि हमारा आदोलन राज्य के अधिकार नीचे देने तक ही सीमित हो। साथ ही ऐसा विभाजन संवैधानिक हो विधायी हो सिफ कार्य पालिक नहीं। आपको इस संबंध में सतर्क रहना है कि सम्मेलन में दिशा भ्रम न हो। चर्चा को विषय केन्द्रित करना आप सबका कर्तव्य है। सरकार का कानून इस प्रकार टूटे कि हम उस कानून को सरकार से हटाकर स्थानीय इकाइयों को देने की मांग कर सकें। कानून अवश्य टूटना चाहिये हम सिर्फ मांग तक ही सीमित न रहें।

आपको एक जिम्मेदार साथी के रूप में बुलाया गया है। आप पूरी तरह सतर्क और तैयार होकर आइये। सम्मेलन से कोई स्पष्ट दिशा निकलनी आवश्यक है। आप अपने साथ अन्य सक्रिय साथियों को भी ला सकते हैं। आप जल्दी ही टिकट करा लें। सेवाग्राम की जगह नागपुर का भी टिकट हो तो वहाँ से बस या ट्रेन से डेढ़ घंटे का रास्ता है।

आपका

बजरंग मुनि